अंतरा-शब्दशक्ति

संस्कारों का हवन कुंड

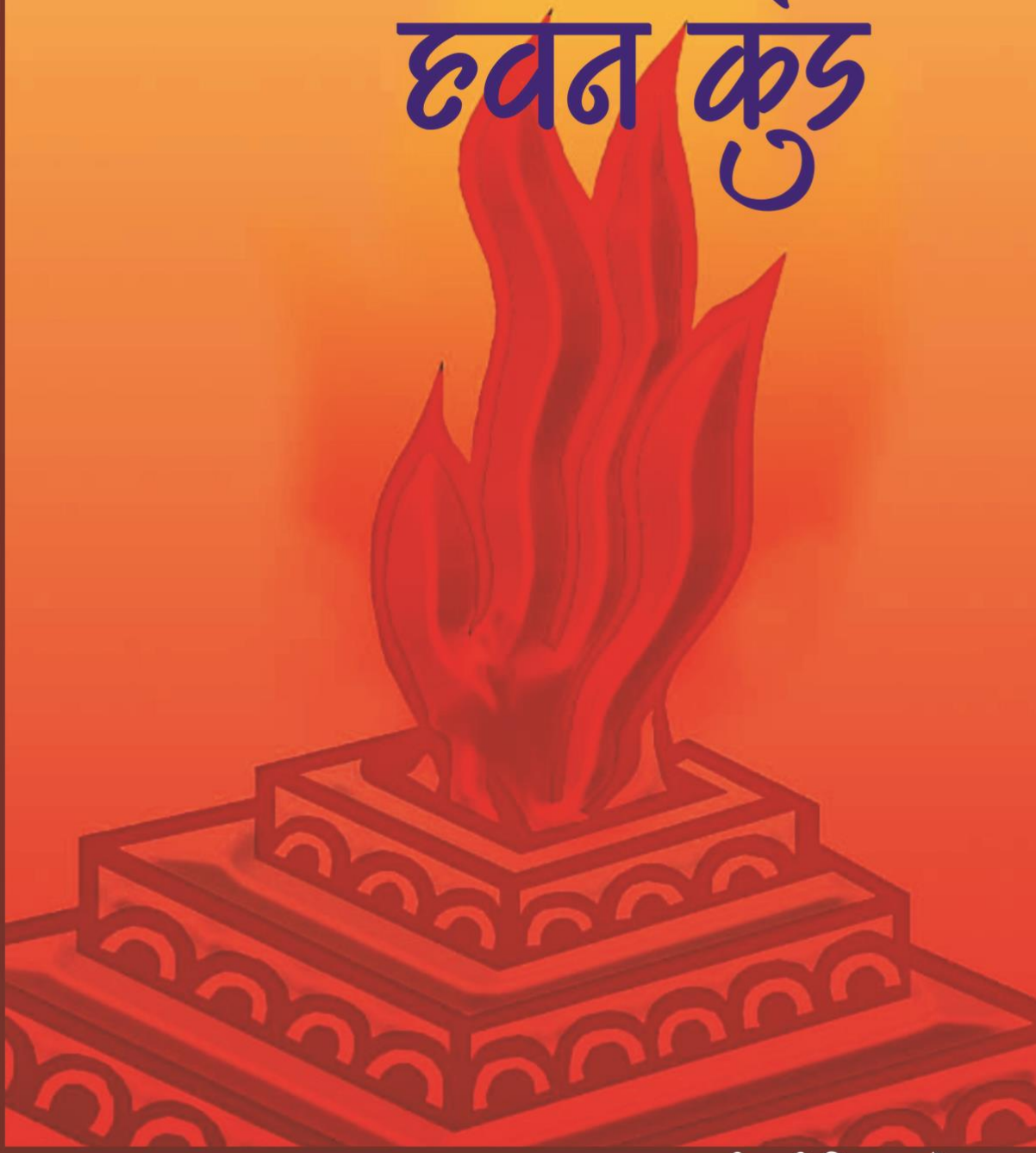

आलेख संग्रह

श्रीमती किरण मोर

संस्कारों का हवन कुंड

(आलेख संग्रह)

किरण मोर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-00-0

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- किरण मोर

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Sanskaro ka hawan kund by Kiran More

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

बचपन से ही पिता जी हमेशा रामायण और महाभारत की कथाओं के जरिए उनकी महत्ता बताते हुए साहित्य से लाभान्वित करते रहते और हमसब भी उन्हें बड़े ध्यान से सुनकर उनसे सीख लेते और फिर उनपर अमल करने की कोशिश भी करते। इस तरह ही लेखन रुचि समा गई पता ही नहीं चला।

जब भाई के लिए पहला पत्र लिखा तब उसकी प्रशंसा से अपनी लेखन क्षमता का ज्ञान हुआ, फिर यदा कदा किसी सम सामयिक विषयों पर लिखने लगी ।

मुझे धार्मिक और सामाजिक उपन्यास में हमेशा रुचि थी और पुरानी संकलन पत्रिकाएं जिनमें कल्याण, नारी अंक शामिल हैं। नारी अंक में अपने कर्तव्य पथ पर चलने वाली सभी नारियों की कथाएं और सुखाकर जैसे महाग्रंथ की सूक्तियाँ बहुत लुभातीं थीं। अब तो नये साहित्य पढ़ने को मिल रहा है तो पिछला अधिकांश भूल गए हैं लेकिन अगर उपलब्ध हो जाएं तो एक बार पुनः पढ़ने की इच्छा है।

विवाह के उपरांत लेखनी को विराम दे दिया। परन्तु अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होते ही पुनः लेखनी हाथ में आ गई और अपने मन के भावों को पन्नों पर उकेरने लगी और तब से अनवरत जारी है ।

मेरे लेखन कार्य में मेरे परिवार का भी बड़ा योगदान है खासकर मेरे बच्चे, जिन्होंने मुझे लिखने में प्रोत्साहन दिया और इसी कारण मैं इस जगह पहुंच पाई, फिर अंतरा से जुड़ने के बाद तो अपने

आप को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ, जिसकी वजह से आज मेरी तीसरी पुस्तक आलेख संग्रह "संस्कारों का हवन कुंड" प्रकाशित होने जा रही है। मैं अपने परिवार, पति, और बच्चों की और अंतरा की बहुत बहुत आभारी हूँ, सबका तहेदिल से शुक्रिया करती हूँ, जिनके कारण आज मैं यहाँ पर खड़ी हूँ।

मेरे आलेख संग्रह में मैंने आज के नये परिवर्तन और परिवेश के चलते संस्कारों का ह्रास होना दर्शाया, संस्कार की अनभिज्ञता और कमियों के कारण आज व्यक्ति किस राह आ खड़ा हुआ है और संस्कारों की हमारे जीवन में क्या महत्व है उसे समझाने की कोशिश की है। आशा है कि आप पाठक गण मेरे आलेख को पसंद करेंगे और प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

किरण मोर कटनी म.प्र.

अनुक्रमणिका

1. अन्तरजातीय विवाह की समीक्षा 7-19

2. नया शीर्षक 20-22

3. आजाद परिन्दे 23-24

4. सूर्यास्त का उजाला 25-26

5. हिन्दू संस्कार का एक और अध्याय-पितृ पक्ष 27-28

6. जनरेशन गैप 29-30

7. वृद्धावस्था की तैयारी 31-32

अन्तरजातीय विवाह की समीक्षा

वैवाहिक दायित्वों के लिए क्या आवश्यक है

रिश्ता, परिवार के संस्कार

परम्पराएं - (सही या गलत)

रिश्तों में विश्वास - कितना

भारतीय समाज में विवाह की आवश्यकता- क्यूँ, कितनी और किसलिए।

अन्तरजातीय विवाह की समीक्षा की श्रृंखला में संस्कारों और परम्पराओं का शनैः शनैः होता

अग्नि-स्नान

संस्कार हमारे भारतीय समाज की धरोहर हैं - जो पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे बुजुर्गों द्वारा हमें प्राप्त होते रहे हैं, और हम उनका निर्वाह बिना किन्हीं अटकलों और परेशानियों के करते आ रहे हैं , पर हर पीढ़ी में कुछ फेरबदल अवश्य ही हो जाता है। हम अपनी नई पीढ़ी को परिवर्तित रुप में विरासत में उपहार स्वरूप में भी प्रदान करते आए हैं।

लेकिन शनैः शनैः उनका रूप इतना परिवर्तित हो गया है कि अब वे संस्कार और परम्पराएं पूर्णतः अपने मायने खो चुके हैं।

अब बदलते परिवेश, परिवार और खानपान इन संस्कारों पर हावी होते जा रहे हैं। सबके साथ साथ हम स्वयं भी आधुनिक तकनीकी दौड़ में शामिल हो उन्हें भूलते जा रहे हैं।

पहले हमारे पूर्वज इन संस्कारों को मानने के लिए बहुत ही कट्टर हुआ करते थे और हमारे लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण था इनका मानना और करना, पर--समय की बदलती तेज धारा ने हम सबको बहाकर इनसे दूर कर दिया। भले ही हम अपने संस्कारों और परम्पराओं को न भूले हों- पर अपनी सुविधानुसार हमने उन्हें परिवर्तित जरूर कर दिया है

उसी सुविधा को बढाने के लिए हमने वैदिक रीति रिवाजों में न करके बहुत ही सूक्ष्म बना दिया है और मात्र औपचारिकता बना दिया है।

इसी तारतम्य में विवाह जैसा अटूट और पवित्र माना जाने वाला, जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संबंध भी अपनी सुविधानुसार सम्पन्न होने लगा है।

आज की पीढ़ी के लिए तो ये सिर्फ एक रिश्ता है, वो भी पति-पत्नी के प्रेम का नहीं बल्कि एक पुरुष व महिला का-वे इसे ही प्रेम मानते हैं। लेकिन वह मात्र आकर्षण होता है।

निभाने का आधार नहीं। क्योंकि निभाने के संस्कार खत्म होते जा रहे हैं।हमने अपना समय बचाने की सुविधा को बढाने के लिए हमने वैदिक रीति रिवाजों में न करके बहुत ही सूक्ष्म बना दिया है और मात्र औपचारिकता बना दिया है।

अब तो समय की माँग कहें या छलावा - ये तक देखने में आता है कि अधेड़ावस्था में भी कभी-कभी कितने ही स्त्री-पुरुष घर छोड़ दूसरी तरफ आकर्षित होते हैं, अपनी वैवाहिक जिन्दगी से ऊबकर न ई तलाश शुरू कर देते हैं। ये क्या है?

आकर्षण मात्र ही तो है : इसका एक कारण यह है कि अब रिश्तों में भरोसा नहीं रह गया है और जिन रिश्तों में भरोसा ही न हो जो कि निभाने के लिए अति आवश्यक है वह रिश्ता टूटना स्वाभाविक है।

इसी अविश्वास की कमी के कारण अपनी सुखमय वैवाहिक जिन्दगी को केवल इस आकर्षण के चलते खत्म कर लेते हैं- कई तो इस बंधन में बंधे हुए भी दूसरे रिश्ते बनाए रखते हैं।

अब ये तो विश्वासघात हुआ न।

और ये सर्वथा अनुचित भी तो है।

पूर्ण रूप से गलत और असमाजिक इस दूसरे रिश्ते का कोई महत्व नहीं है, फिर भी इसे जीते हैं और इसमें सुकून पाना चाहते हैं और इसका असर उनकी वैवाहिक जीवन पर होने लगता है। अगर बच्चे हैं फिर तो समझो उनकी जिंदगी खराब ही है।

आज की युवा पीढ़ी तो (सभी नहीं) क ई जगहों पर बड़े शहरों में तो विवाह जैसे पवित्र रिश्ते को भी मानने से इंकार कर रहे हैं, क्योंकि उनके हिसाब से ये एक बंधन है।

वे किसी बंधन में और किसी के लिए जीना नहीं चाहते हैं वे सिर्फ अपने लिए जीना चाहते हैं-उनकी सोच तेजी से परिवर्तित हो रही है, आज के दौर के एक एक पल को वे अपने हिसाब से जीना चाहते हैं जब चाहा रिश्तों में बंधना और छूटना चाहते हैं।

इसलिए विवाह भी अब एक संस्कार नहीं आवश्यकता बन गई है "क्योंकि ये प्रेम नहीं आकर्षण मात्र है" साथ रहने का-कुछ दिन का उसके बाद ऊब महसूस की आकर्षण खत्म तो रिश्ता भी खत्म। और वैवाहिक संस्कार का अग्निस्नान।

हवन कुंड के इर्द-गिर्द लिए गए सात वचन और फेरे उसी में जलकर भस्म।

अब महिलाएं भी पढ़-लिखकर सही गलत का आकलन करना सीख गई हैं वैसे पहले भी पुरुष रिश्ते रखते थे पर स्त्रियाँ मर्यादा में बंधी मजबूर होतीं थीं और जानबूझकर जहर के घूंट पीती रहतीं थीं क्योंकि तब वे असहाय और पराधीन थीं।

वैसे तो अब अधिकतर परिवार भी महिलाओं को आगे बढ़ाने में प्रोत्साहन दे रहे हैं और उन्हें साक्षर बनाकर कंधे से कंधा मिलाकर चलने में सहयोग भी कर रहे हैं लेकिन जो समझदार और संस्कारवान हैं वे तो अपना दायरा समझती हैं और कुछ इस स्वतंत्रता का गलत मतलब निकाल कर जीवन का अर्थ समझे बिना आधुनिकता की दौड़ में शामिल होकर अपने संस्कारों को तिलांजलि देते हुए अपना जीवन बर्बाद कर रही हैं। अपने संस्कार और परम्पराओं को छोड़कर विदेशी पहनावे के साथ साथ विदेशी सभ्यता का रसपान करते हुए पुरुषों की बराबर होने के चक्कर में अपनी नारी गरिमा को भूलकर भी अपने को बिना सोचे समझे साबित करने के लिए शनैः शनैः अपनी सभ्यता और संस्कृति की आहूति एक के बाद एक करतीं जा रहीं हैं। और पुरुष तो पहले ही इसके लिए तैयार है, बस इशारे का इंतजार कर रहे हैं।

विवाह बंधन में बंधने का अर्थ है जनम-जनम का साथ। इसमें प्यार, विश्वास, संस्कार, आकर्षण और निभाने का जज्बा

सब कुछ और इस रिश्ते को बड़ी शिद्दत से निभाया जाता। एक सफल वैवाहिक जीवन की नींव विश्वास और भरोसे पर टिकी होती है और इसी विश्वास पर अन्य द्वारा (माता-पिता) तय किया गया रिश्ता भी निभाया जाता था।

पर आज का युग अपनी पसंद के अनुसार जीना, रहना, पहनना खाना सब कुछ अपनी पसंद,यहां तक कि अपनी पसंद से विवाह भी। सबकी अनुमति माता-पिता द्वारा आसानी से प्राप्त हो जाती है कोई हस्तक्षेप नहीं कोई कलह नहीं, क्योंकि आज के आधुनिक माता-पिता भी बच्चों की खुशी में अपनी खुशियाँ ढूंढ रहे हैं, और इसीलिए वे अपनी पसंद के साथ साथ अंतरजातीय विवाह तक की अनुमति देने में पीछे नहीं हटते। क्योंकि बच्चों की खुशी का सवाल इससे जुड़ा है इसलिए वे परिवार सहित इसमें खुशी से सम्मिलित हो रहे हैं।

युवक और युवतियाँ अपनी पसंद से चुनकर पढी लिखी आधुनिक सोच वाली अपने समकक्ष काबिल जीवन साथी चाहते हैं।

इसमें कोई बुराई भी नहीं है, आज महिला सशक्तिकरण से सब संभव हुआ है। उन्हें भी अपने जीवनसाथी चुनने का अधिकार है, पर सवाल यह है कि इनका निर्वाह आगे जीवन भर हो पायेगा या नहीं?

क्योंकि आज की आधुनिक सोच की विचारधारा-जो हर एक दिन नये रूप में सामने आती है, हर पल हर बात बदलकर सामने आती है एक नये रूप और नये अंदाज में नया अर्थ लेकर खड़ी होती है

युवा पीढ़ी के सामने और विश्वास और संस्कार की कमी के कारण उनके अपने पसंद किए गए जीवन पर भी इसका प्रभाव दिखाई देता है और अपने द्वारा चुना गया अपना संबंध "विवाह जैसा अटूट पवित्र रिश्ता, एक परम्परा" और जीवन साथी का अर्थ समझे और जाने बिना एक पल में तोड़ देते हैं।।

वह वापस उसी जीवन में जाना चाहते हैं जो वे शादी के पहले जी रहे होते हैं। क्योंकि जब आकर्षण जिम्मेदारियों का रुप लेने लगता है और शायद वे इससे कतराते हैं या अपना जीवन पहले जैसा विलासिता और भरपूर आनंद में जीना चाहते हैं और कुछ दिनों में विवाह जिम्मेदारी बनकर उनकी विलासिता में अटकलें पैदा करता है और तब वो मात्र आकर्षित होकर कसमें खाकर जीवन साथ गुजारने की चाहत समय के साथ खत्म होने लगती है और वह उनको उबाऊ लगने लगा और फिर से नये जीवन की तलाश शुरू हो जाती है, प्यार और भरोसा जीवन का अर्थ समझाता है और किसी बंधन में बंधने का महत्व भी। ये मात्र आकर्षण होता है इसलिए जब आकर्षण खत्म तो रिश्ता भी खत्म।

एक और नया तरीका
समाज से विरक्त प्रेम विवाह
आधुनिक रीति से
कम समय और कम खर्च।
समाज की अनुपस्थिति में
"यानि कि कोर्ट मैरिज"

केवल एक हस्ताक्षर और बंध गए शादी के बंधन में, लेकिन जिस तरह सबसे कम समय में बिना किसी की उपस्थिति के ये शादी होगी उतने ही कम दिनों में कभी एक हस्ताक्षर से टूट भी

जाती है और वापिस अपने अपने घर, उस पर भी खुशी खुशी एक नये संबंध की तलाश। और वह भी माता पिता द्वारा, जबकि उन्हें समझाना चाहिए कि भले ही अपनी पसंद से सही शादी की है तो उसे निभाने की बजाय टूटने पर खुश होकर नकारात्मक सोच को बढाने में लग जाते हैं, जिस लड़की की जिंदगी खराब हो गई उसके बारे में नहीं सोचते उन्हें अपने लड़के की आजादी के खुशी होती है ताकि वे अपनी मनपसंद जगह फिर से शादी कर सकें। हालांकि लड़की भी दोषी होती है पर कभी-कभी धोखे का शिकार हो जाती है।

शादी मानो गुड्डे गुड़ियों का खेल हो गया है न समाज की आवश्यकता और न परिवार की और जिस तरह कभी कहीं ये शादियां होतीं हैं वैसे ही टूट जाती है। कुछ कट्टरवादी परिवार और समाजवादियों को छोड़कर अंतरजातीय विवाह को अपना तो लिया है लेकिन निभाना नहीं अपनाया है। क्योंकि शादी जैसा पवित्र बंधन टूटता है तो बहुत सी जिन्दगियों पर असर होता है। पहले तो शादी निभाई जातीं थीं, अब तो अपनी पसंद की हैं फिर भी? नहीं निभा पाते हैं या नहीं निभाना चाहते।

आधुनिक युग की अधिक व्यस्तता और खर्च के कारण आज के समय को देखते हुए घंटे 2 घंटे में ही शादी करवा दी जाती है और विवाह से संबंधित सभी पुरानी रस्में जो जीवन के हर पहलू को लेकर बनाई जाती थी वे सब नदारद हैं।

वही रस्में पहले प्रेम, भरोसा और निर्वाह करने के मायने समझातीं थी, पर अब न ही वे रस्में हैं न उनके कोई मायने सात

वचन भी लग्न मंडप से निकलते ही भूल जाते हैं। सिर्फ कन्यादान और फेरे जैसी मान्यता भर निभाई जाती है वह भी जल्द बाजी में अतः वो भी निभाने के वक्त भुला दी जाती है।

इसका सबसे बड़ा कारण है, शायद कि आज की स्त्रियाँ भी अपने अधिकार जानने लगीं हैं, वह अब निरक्षर नहीं है, वह भी अब अपने मुकाम हासिल कर रहीं हैं अतः वे अब सहने को मजबूर नहीं है,, वे भी नयी सोच के साथ आगे बढ रही है और समाज की रस्में उन्हें कुरीतियाँ लगने लगीं और उन्हें वे ताक पर रखकर पुरुष के बराबर खड़ीं हैं, और अपने अधिकार प्राप्त कर रहीं हैं। अपने दायरे से बाहर निकल रहीं हैं और अपने अधिकार के लिए लड़ रहीं हैं।

पर शायद पुरुषों को उनकी स्वतंत्रता ठेस पहुंचाती है और अगर शादी अंतरजातीय हुई तो कभी-कभी प्यार भी हवा हो जाता है और फिर माँ बाप भी उसमें शामिल होकर उस लड़की को प्रताड़ित करने लगते हैं फिर भले ही वह विवाह कर आती है पर दुनिया भर के लांछन उसपर लगाकर उसको ही गलत साबित किया जाता है और ये सिर्फ अनपढ़ नहीं वरन् पढ़े-लिखे लोगों में भी देखने को मिलती है अभी भी हर जगह मानवता को भुलाकर शारीरिक संरचना के आधार पर केवल स्त्री को ही कमजोर और मूर्ख समझकर उसे ही प्रताड़ित किया जा रहा है।

वैसे कुछ हिस्सों में अब स्त्रियाँ काफी आगे बढ़ चुकी है और अपना जीवन अपनी शर्तों पर जी रहीं हैं लेकिन उनका प्रतिशत बहुत कम है अभी भारत में। और ये सब उनकी छोटी सोच और छोटी मानसिकता की वजह है। लेकिन कुछ लोगों ने इसे बदलने की कोशिश की है स्त्री के लिए ओछी मानसिकता वाले उसकी

जिंदगी में रोड़े अटकाने में लगे हैं किसी न किसी तरह से। पहले घर में शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था और अब तो और भी ज्यादा हिंसक हो गया है समाज शारीरिक और मानसिक रूप से भी अब घर और बाहर दोनों जगह स्त्री महफूज नहीं है।

संस्कार और संस्कृति को ताक पर रखकर हर व्यक्ति आज सिर्फ अपना स्वार्थ देख रहा है वह भी हर कीमत पर। इस लिए अब विवाह जैसे पवित्र बंधन भी निभाना जरूरी नहीं समझा जा रहा है और वह हवन कुंड की अग्नि में भस्म होता जा रहा है। और अब एक और नये चलन का इजाफा हुआ है - स्त्री-पुरुष के लिए बिना शादी के साथ रहने का चलन।

कहते हैं ये चलन शादी के पहले एक दूसरे को समझने के लिए ऐसा किया गया है और शायद न ई विचारधारा और सोच भी इसका एक कारण है और बिगड़ते विवाह संबंध भी कहीं न कहीं। लेकिन भारतीय समाज की सभ्यता और संस्कृति इसकी इजाजत कभी नहीं देती लेकिन सभ्यता और संस्कृति को न मानने वाले लोग ही इसको अंजाम दे रहे हैं। वैसे तो ये विदेश का चलन है पर भारतीय भी इसे अपना रहे हैं, जो कि बिल्कुल गलत है ऐसे संबंधों में रहने के कारण अब तो सचमुच ही इतनी पवित्र परम्परा संस्कार का अग्निस्नान हो गया है इस अनोखे और अनैतिक संबंध का नाम है ।

"लिव इन रिलेशनशिप "

यानि बिना विवाह भी सारे संबंध पति पत्नी जैसे निभाना। ऐसे संबंध में कब तक शारीरिक संबंधों से बचा जा सकता है। और इसका अंत अंततः एक ही होता है वह है लड़कियों का ही गलत

कहा जाता है जब विवाह जैसे पवित्र बंधन में बंध जाने पर उसे गलत कहा और समझा जाता है तो फिर बिना विवाह साथ रहने का चलन कैसे सही हो सकता है।

इसलिए इसका खामियाजा भी अधिकतर लड़की को ही उठाना पड़ता है। वहां भी एक लड़की विश्वास करके रहने को राजी हो जाती है, पर अपनी पुरुष प्रधान मानसिकता के चलते वहां भी वह छली जाती है। और फिर समाज भी उसे न्याय दिलाने की जगह उसे अपनाने से ही इंकार कर देता है। वैसे भी हमारे देश में अभी इसकी मान्यता नहीं है, इसलिए उसका दोषी भी लड़की को ही बनाया जाता है। और नुकसान भी उसी का क्योंकि लड़के का परिवार तो उसे अपना ही लेता है लेकिन एक लड़की का जीवन बर्बाद हो गया, वह कहीं की नहीं रह जाती या तो मरना या परिष्कृत होकर जीना बस यही बचता है उसके लिए और कुछ नहीं, कभी किसी ने उसे अपना भी लिया तो अपने स्वार्थ के लिए और पग पग प्रताड़ित करने के लिए।

कहते हैं प्रेम के लिए किसी रिश्ते की आवश्यकता नहीं होती है,, सही है - प्रेम के लिए रिश्ते में बंधना कोई आवश्यक नहीं है।

प्रेम तो स्वतः मानव को अपनी ओर आकर्षित करता है, उस पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहता है। परन्तु उसी प्रेम का अगर किसी रिश्ते से अनुबंध हो जाए तो वह रिश्ता प्रेम से अनवरत चलता है। कोई व्याधि या संकट भी आ जाए तो उससे जूझने की शक्ति वही प्रेम देता है, जिससे प्रेम से

उससे मिलकर भी उस समस्या का समाधान खोजा जा सकता है और वहीं अगर विरक्त हैं अर्थात किसी बंधन में रिश्ते में नहीं है तो उस स्थिति में वह स्वार्थी हो सकता है।

प्रेम अवश्य करें साथ में रहने से ही प्रेम उत्पन्न होता है और इसे रिश्ते में जोड़ दिया जाए तो यह वह सार्थक होगा और निभाने का साहस देगा और रिश्तों में प्रेम का भरोसा है तब और भी प्रगाढ़ हो जाता है।

आज चूँकि एक सच ये भी है की हर व्यक्ति दोहरे मापदंड वाली नीति पर चलता है अतः किसके मन में कब क्या होता है यह जानना बहुत मुश्किल है और आज इंसानियत की जो तस्वीर है, उसमें विश्वास, अपनापन, प्यार और इज्जत की कोई जगह नहीं है। आज प्रेम हो या रिश्ते, सब स्वार्थपूर्ति की परिभाषा बनते जा रहे हैं।

ये भी सच है कि इस तेज रफ्तार भागती दौड़ती जिन्दगी में रिश्तों के लिए जगह नहीं है, लेकिन जीवन में किसी का साथ तो चाहिए ही कोई रिश्ता भी बनाना पड़ेगा और भरोसा भी करना होगा भले फिर वह कायम रह पाए या नहीं।

आज तो जन्म के रिश्ते भी दगा दे रहे हैं-फिर माँ-बाप भाई-बहन के अलावा जीवन साथी का रिश्ता है जो सामाजिक है जो हम संसार में जोड़ते हैं, इसी रिश्ते से फिर माँ बाप और अन्य रिश्तों की उत्पत्ति होती है। तो ये ही सबसे मजबूत और निःस्वार्थ माना गया है इसी पर समाज की नींव है। अंतरराज्यीय विवाह एक ही वर्ण और धर्म में हो तो अति उत्तम है।

यह सर्वथा अनुचित नहीं है, हां थोड़ा वैचारिक मतभेद हो सकता है, लेकिन सूझबूझ और परिवर्तित युग को ध्यान में रखते हुए इसका समाधान निकाला जा सकता है, हम सभी इंसान हैं। आज सभी बच्चों की खुशी में अपना योगदान दे रहे हैं लेकिन दोनों पक्ष भावनात्मकरूप से जुड़े हैं तो बहुत अच्छा है, वैसे भी अन्तरजातीय विवाह गलत नहीं है।

धर्म, वर्ण भेद के कारण ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसमें ऊंच नीच और अपमान की भावना घर कर जाती है और अलगाव की स्थिति बन जाती है। वैचारिक मतभेद भी शादी असफल होने का कारण बनते हैं।

सभी घटक आज एकजुट होकर कार्य कर रहे हैं और हिन्दुत्व को कायम रखने के लिए अन्तरजातीय विवाहों को नकारा नहीं जा सकता है। विवाह का स्वरूप कोई भी हो- सामाजिक, परम्परागत, प्रेम विवाह या फिर कोर्ट मैरिज,. विवाह निभाने के लिए विश्वास, प्रेम और एक दूसरे के लिए आदर होना बहुत जरूरी है, जो कि हर रिश्ते के लिए है, लेकिन जीवन साथी के लिए अति आवश्यक है।

अन्तरजातीय विवाहों की भेड़चाल में शामिल होना अलग बात है, पर उसे परम्परागत तरीके से कायम रखना और सफल बनाना अलग।

आधुनिक सोच के साथ संस्कृति, संस्कार और सभ्यता से निभाने का जज्बा भी शामिल हो तो अन्तरजातीय विवाह में कोई बुराई नहीं है।

मनपसंद की शादी तो राम-कृष्ण के युगों से होती आईं हैं, फर्क सिर्फ इतना ही वे स्वार्थ के लिए नहीं परमार्थ के लिए होतीं थीं, अतः अत्यंत सफल हुईं।

आधुनिक सोच में संस्कारों का समावेश वैवाहिक ही नहीं जीवन के हर रिश्ते को सफल बनाता है।

नया शीर्षक

ज्ञानियों का कहना है- कि "नारी नर्क का द्वार" है
हालांकि ये कहावत बहुत पुरानी है, अब ये कहावत के मायने उलट गए हैं।

अब जिन्होंने भी इस कहावत को ईजाद किया है वह किस आधार पर किया होगा, ये तो नहीं पता।

और कहावत भी काफी पुरानी है लेकिन सभी के मुख से बचपन से सुनती आ रही हूँ, तो इस पर लिखने की इच्छा जाग उठी।
जैसा कि मैंने कहा :-कि अब इसके मायने उलट गए हैं, अर्थात इसे उल्टा कर दिया जाए तो मेरी परिभाषा ये होगी -
नारी नर्क का द्वार नहीं अपितु वह "स्वर्ग की सीढ़ी" है।
इसकी व्याख्या तो नहीं कर सकती, परन्तु इतना ज़रूर कह सकती हूँ कि : एक पुरुष और औरत की जिन्दगी जहाँ से शुरू होता है - वो उनके जीवन का प्रवेश द्वार होता है और नारी ही समझ लो उसका =प्रवेश द्वार= है।

वैसे तो नारी और पुरुष दोनों ही साथ में जीवन में कदम रखते हैं, परन्तु सही मायनों में उसका जीवन उसके जन्म से ही शुरू हो जाता है।

सबसे पहले तो बेटी होने पर ही अफसोस किया जाता है, उस समय वह भूल जाते हैं कि एकबेटी ही सृष्टि की रचना है

उसे बचपन से ही एहसास कराया जाता है कि वह एक लड़की है मानो लड़की इंसान नहीं है फिर भी चलो माना बेटी होने के अफसोस को पर उस घर की बेटी यानि कि ननद और उसी की भी माँ वो सास भी उस समय बेटे की चाहत में अपनी एक बेटी और औरत होने के वजूद को भूल जाते हैं और आने वाली बेटी भी उसी परिवार का अंश है कोई गैर नहीं पर फिर भी बेटों को महत्व। ये क्यों नहीं समझते इंसान की बेटी - बेटी सब उन्हीं के हैं पता नहीँ शारीरिक संरचना के आधार पर क्यूँ फर्क आ जाता है इंसान को इंसान नहीं समझा जाता जबकि सभी को पता है कि शारीरिक संरचना में अंतर का आधार भी सृष्टि की संचालन व्यवस्था से संबंधित है। जब दो असमान प्रकृति से ही नया जन्म संभव है न कि समान प्रकृति के। जबकि वही नारी सबके जीवन की खुशियों में अपने आप को झोंक देती है अपने आप को न्योछावर कर देती है सब पर। फिर भी जाने क्यों उसे बोझ समझकर उसका पालन पोषण किया गया है और बेटे को सिर चढ़कर। एक लड़की स्वयं ही अपने आप को एक मर्यादा के दायरे में रखती है, वह जानती है कि वह लड़की है उसे हर वक्त एहसास दिलाने की जरूरत नहीं है।

वैसे तो नारी भी अब शिक्षित है, शिक्षा के प्रति जागरूकता आई है अब एक लड़की और लडके में कोई फर्क नहीं है दोनों को बराबर शिक्षित किया जा रहा है, लेकिन केवल शिक्षा स्वतंत्रता नहीं। अभी नारी के लिए वही मानसिकता दिमाग पर चित्रित है। इसलिए अगर कोई किसी हादसे का शिकार हो भी जाती है तो उसे ही चुप रहने को कहा जाता है। घर की मान मर्यादा का वास्ता देकर और उसकी नियति मानकर और अगर तब भी अगर उस हादसे में हुए अपने अपने को नहीं छुपा पाई तो उस पाप का दोषी

भी उसे ही ठहरा दिया जाता है करते हैं, क्योंकि पुरुष के पाप का कोई साक्षी नहीं होता और उसका पाप ईश्वर ने जिस वरदान से उसे नवाजा है वही पाप का रूप बन जाता है वह फिर भी चुप रहकर सब कुछ सहन करते हुए उस पाप के अंश को भी जन्म देती है उसमें संस्कार भररती है। तब भी उसी को गलत मानकर दोषी ठहराया जाता है।

वही अपने घर को संवारने के लिए बच्चों की रक्षा के लिए, पति की सफलता परिवार की खुशी भलाई के लिए झोली फैलाए भगवान् से लड़ती रहती है कभी माथा टेक कर तो कभी आंसू बहा कर। दिनभर सबकी सलामती की दुआएं मांगती है। शायद संसार भी अभी तक नारी के बल पर ही टिका हुआ है, वह न हो तो अभी तक इतनी भी इंसानियत न बची होती। वह अपने आप को भुला कर लोगों को जन्म देने के साथ उनकी जिंदगी भी बनाकर उनको बुलंदियों पर पहुंचाती है। हर रिश्ते में वह सबसे आगे खड़ी होती है। कभी बहन, बेटी तो कभी माँ के रुप में।

इससे मेरी परिभाषा तो यही कहती है, "नारी नर्क का द्वार" नहीं वह "स्वर्ग की सीढ़ी है"।

आजाद परिन्दे

आजादी के पहले का देश और बाद के देश में जमीन आसमान का फर्क है। देश को आजाद कराने वाले हमारे संग्राम सेनानियों ने क ई लड़ाइयां हमारे लिए लड़ीं, तब कहीं हमने पाया आजाद देश वर्ना तो हम अभी भी गुलाम ही होते जिन्होंने लड़ाई लड़ी वह सिर्फ अपने लिए नहीं थी बल्कि समूचे भारत के लिए थी और भारत में कितने करोड़ भारतवासी हैं ये सर्वविदित है। हम स्वतंत्र हुए, हम खुश भी बहुत हुए :लेकिन इस खुशी में हमारा अपना कितना योगदान है - इसका आकलन किया कभी नहीं किया, क्योंकि दूसरे द्वारा मुहैया कराई गईं आवश्यकताएं अधिक सुकून देतीं हैं "बैठे बिठाये जो मिल गया सब कुछ, उसपर भी तानाकशी करना और बुराइयां निकालना, आलसी लोग ऐसे ही होते हैं" और अब तो सब ऐसा ही है, एक 2,4,6,8 नहीं सर्वत्र व्याप्त है ऐसा ही माहौल हमारी आदत हो गई है किसी के अर्जित कार्य को प्रोत्साहन देने के बजाय उसमें बुराइयां निकालना। अब जो स्वच्छता अभियान देश में चल रहा है उसमें बजाय सहयोग के कहते फिर रहे हैं "चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात" अगर प्रधानमंत्री मंत्री ने बीड़ा उठाया है तो क्या वही हर जगह झाड़ू मारें। क्या वे स्वयं के लिए सब कर रहे हैं अगर हां तो पूरे देश में इसकी क्या जरूरत है जिन जगहों पर उनका रचना है सिर्फ वहीं कर सकते हैं। और देश के लिए तो देश का सहयोग भी आवश्यक है।

हम भी उनके इस नेक काम में सहभागिता देकर कुछ करें, देश के लिए न सही अपने ही लिए बस उसी जगह को साफ रखें जहाँ हम रह रहे हैं, इसी तरह हर व्यक्ति सोचे तो देश सचमुच एक दिन साफ सुथरा हो जाएगा। किसी भी नेता के लिए किसी भी अभियान के दौरान जनता कासाथ ही सर्वोपरि है लेकिन बैठे बैठे खाना उसपर फिर बड़बड़ाना बस आलसी लोगों के पास सिर्फ यही काम रह गया है और उसपर भी हर कार्य के लिए सरकार ही जिम्मेदार बस निर्भर होने की आदत है तो छोटी से छोटी समस्याओं के लिए भी सरकार पर ही निर्भर हैं, हम क्यों करें ये तो सरकार का काम है। सरकार हो या जनता सभी का जागरूक होना आवश्यक है नही केवल सरकार कुछ अकेले कर सकती है और न ही जनता बिना एक-दूसरे के सहयोग के कोई भी आयोजन सफल नहीं होता, पर देखा गया है कि कहीं कहीं आयोजन कर्ता ही अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगे हैं जनता की छोटी-छोटी रोजमर्रा की चीजों में भी देश जो जनता के लिए कर रही है उसमें भी अपना स्वार्थ ढूँढ लेते हैं।

अगर देश को विकसित करना है तो समानता आवश्यक है और समानता के तहत वे ही चीजें चाहिए जो कि जीवन यापन के लिए जरूरी है बाकी सब भोग विलास है।

आम हो या खास हर व्यक्ति की आवश्यकता समान है और भारत में वही नहीं है जब तक वह समान नहीं होती तब तक देश में सुधार लाना असंभव है। क्योंकि जब एक नेता अपने को साधारण व्यक्ति कहेगा और वैसे ही रहेगा तो जनता भी शायद साथ देने के लिए आगे आए बिना किसी डर परेशानी और झिझक

के। नहीं वह भी अपने भोग विलास के लिए किसी भी हद तक जायेगी और वह हद कोई भी हो सकती है अपराधिक, धोखाधड़ी और चोरीकर लड़कर किसी भी तरह प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं और वह अनुचित है, फिर भी। ये खत्म करने के लिए सहयोगी बनें और देश के लिए फिर अपने लिए करें। अपनी बैठे-बैठे पाने की आदत से बाहर निकल कर अपनी सोच बदलें और देश की तरक्की में बाधा न बनकर सहयोगी बनें।

सूर्यास्त का उजाला

महिला सशक्तिकरण के दौर में उन महिलाओं की बात जो जीवन मे बहुत कुछ करने की चाह रखते हुए भी किन्हीं कारणों से नहीं कर पातीं।

कभी घरेलू कारण, किसी के प्रोत्साहन की कमी,और कभी उसका मजाक बनाते लोग और समाज के वो दिग्गज जो कभी भी उसके आंसुओं को न तो कभी पोंछने आए और न ही उसको अंधेरों से बाहर निकालने आए।

उसकी सिसकियों की गूंज ने कभी उन्हें आहत नहीं किया-बल्कि उसकी बहती आंखों का मजाक बनाकर ऐसी तुच्छ नजरों से देखा जैसे कि वो कोई अछूत है या कोई बीमारी।

वह गरीब है उसके पास पैसा नहीं है। और आज का जीवन पैसे की पावर का है पैसा है तो पावर स्वतः आपकी झोली में आ

गिरता है, हजारों की सलामी मिलती है, उस सलामी की औकात है या नहीं क्योंकि आप नहीं आपकी पावर जो कि पैसे के बल पर प्राप्त हुई है वो बोलती है। और पावर के नीचे इंसानियत तो वैसे भी अपना दम तोड़ रही है।

जीवन के हर क्षेत्र में काबिलियत दम तोड़ती नजर आ रही है। अगर पैसे की खनक आप साथ रखते हैं तो दुनिया आप की जेब में, उस खनक की आवाज से ही दुनिया आपके कदमों में झुकने को तैयार है।

पावर की चमक हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करती है और आपकी गुणवत्ता की पहचान आपके पैसे की चमक और खनक से की जाती है, चाहे वह पैसा फिर किसी भी राह से चलकर आया हो। पैसा तो पैसा ही है। इससे फर्क नहीं पड़ता।

कोई व्यक्ति या महिला गुणों की खान भी है तो आज वह बेकार है, उसको परखने वाला कोई नहीं है।

साबित करने के लिए भी तो रुपये चाहिए जो कि आपके पास है ही नहीं। कहीं नाम दर्ज कराने के लिए पैसे के पावर की बहुत आवश्यकता है आज के बदलते दौर में। केवल खाली प्रतिभा का कोई मूल्य नहीं।

ऐसे ही कई प्रतिभावान महिलाओं का भी यही हाल है उनमें बहुत सी योग्यताओं के होते हुए भी पीछे रह जाती है,

क्योंकि उस जगह पर धन के मद में धनवान महिलाएं खड़ी होती हैं उनका रास्ता रोक कर, उनको आगे आने नहीं देतीं और उनके रहन-सहन पहनावे, खाने का और अन्य तरीकों से उनका मजाक बनाती है और सबके सामने उन्हें बेइज्जत करने से नहीं चूकती। और इस तरह उनकी प्रतिभा का सूर्य उदय होने से पहले ही सूर्यास्त में बदल जाता है और धीरे-धीरे ढलती रात की तरह खत्म हो जाता है।

हिन्दू संस्कार का एक और अध्याय-पितृ पक्ष

पितृ पक्ष के पन्द्रह दिन अपने पूर्वजों को याद करने का बहुत अच्छा समय है, इन पन्द्रह दिनों को इसलिए माना जाता है कि हमारे जो पूर्वज जो स्वर्गवासी हो गए हैं और हम उनको भूलते जाते हैं, जैसे जैसे समय आगे बढ़ता जाता है पिता और दादा-दादी के और पहले की पीढ़ी के बुजुर्गों को भूल जाते हैं या शायद हम उन्हें जानते ही उन्हें जानते ही नहीं हैं। वैसे भी आज के भारत में तो केवल दादा-दादी तक ही रिश्ते तक ही बच्चों को पहचान होती है पिता के दादा और उनसे जुड़े सभी रिश्तों को जानते ही नहीं हैं।

पर 15 दिन के इन पितृ पक्ष में उनके बारे में जानने का मौका मिलता है और कभी-कभी जिनके परिवार आगे नहीं बढ़ पाते उनके मोक्ष के लिए परिवार के किसी भी सदस्य द्वारा किया

जाता है, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। वैसे भी पिता द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्यों को पूरा करने की जिम्मेदारी और फर्ज पुत्र द्वारा हो ऐसा माना गया है और ऐसा कहा जाता है कि जब तक वह कार्य पूरा न हो वे शायद मोक्ष को प्राप्त नहीं होते। और दुनिया में ही विचरते रहते हैं।

और पिता के अधूरे कार्य बेटे द्वारा पूरे करने को पिता के प्रति अपनापन और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। और अगर कोई बेटा अगर वह सम्मान नहीं देते हैं तो वे इसी जगत में भटकते रहते हैं। पिता द्वारा छोड़े गए कार्यों को पूरा करने को ही पितृ ऋण माना गया है और उनका तर्पण पुत्र का ही अधिकार है, ऐसा ही शास्त्रों में लिखा गया है। मृत्यु को प्राप्त होने के पश्चात भी कुछ कर्मकांड बाकी होते हैं करने को, जिनके लिए पितृ पक्ष के 15 दिन कहे जाते हैं और इन 15 दिनों में हर बेटे को या किसी भी अन्य परिजनों और रिश्तेदारों को अपने पूर्वजों का "तर्पण" अवश्य ही अपनी श्रद्धा अनुसार करना चाहिए। जिस भी तिथि को वे मृत्यु को प्राप्त हुए हों उसी को ब्राह्मण भोजन, दान पुण्य और श्रद्धांजलि करें और उनके नाम का हवन पूजन करें। किसी पंडित की सलाह पर जो भी उनके लिए उचित कहा गया है वह कर उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हेतु नमन करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करें और अपने बच्चों को भी इससे अवगत करायें। ये भी एक संस्कार है जो धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है।

जनरेशन गैप

जनरेशन गैप है क्या?

आखिर

पीढ़ियों का अंतर

विचारों का अंतर

पहनावे का अंतर

उम्र का अंतर।

शायद ये सभी कुछ।

पीढ़ियों के अंतर है तो उम्र में अंतर, स्वभाव में, विचार में और सोच में भी सभी कुछ अलग, ये तो स्वाभाविक सी बात है, पीढ़ी के अंतराल में मतभेद तो होंगे ही और मतभेद तो मनभेद भी विचारों का भेद, सोच का भेद सब सही है - - पिता के पास तजुर्बा और अनुभव है तो पुत्र के पास सीखने की उत्सुकता, नयी उम्र पाने का जज्बा, नये-नये आयाम, काम करने के लिए न ई राह नई चाह सबकुछ अलग दोनों में विरोधाभास तो होगा ही, अब परिवर्तन ही संसार का नियम है ये तो सत्य है तो उम्र के साथ

साथ वस्तुओं में भी परिवर्तन और और न ई पीढ़ी के लिए नया तजुर्बा तो दूसरी के लिए वही पुराना भौतिक वस्तुओं का अधिकाधिक प्रयोग हम सभी अपने समय से ही अपनाते आये हैं, अब दूसरी पीढ़ी की समय परिवर्तन के अनुसार विचार धारा है और हमारी हमारे अनुसार यही जनरेशन गैप कहा गया है, सोचना, समझना, पहनना, बोलना सभी कुछ अपने-अपने समय के अनुसार करने की प्राथमिकता होना और उसी पर मानने की बाध्यता होना ही जनरेशन गैप हुआ। और ऐसा होना या करना बिल्कुल स्वाभाविक है। बल्कि अपने विचार बच्चों पर थोपने की बजाय हम भी नये परिवर्तनों को अपनाकर उनमें अपने संस्कारों के साथ सहयोग करेंगे तो उन्हें समझने में आसानी और हमें भी नये समय के परिवर्तन की जानकारी और दोनों के विचारों का परस्पर अवलोकन कर नई दिशा का आगाज हो सकता है। और जनरेशन गैप भी धीरे-धीरे कम होकर स्वतः ही समाप्त हो जाएगा।

वृद्धावस्था की तैयारी

आधुनिक युग, एकल परिवार, बदलता परिवेश, मीडिया पूरक संसार और उस पर धन का अनावश्यक उपयोग ये सभी कारण आज दिनचर्या में शामिल हो गए हैं। आज बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक अपने आप में ही व्यस्त रहने लगे हैं और अपने आने वाले समय यानि वृद्धावस्था की ओर ध्यान नहीं है,, और ध्यान तभी जाता है जब उसका एहसास होने लगता है, हम जीवन में व्यस्त होते हैं और समय हमारे हाथ निकल चुका होता है, हम अपने आने वाले कल के बारे में कुछ नहीं सोचते जब सोचते हैं तब समय नदारद रहता है। इसका कारण हमारा जीवन में अति मशगूल हो जाना है और उस समय बढ़ती उम्र की कल्पना भी नहीं कर पाते हैं हम भूल जाते हैं कि सबका बुढ़ापा एक न एक दिन आता ही है।

इसका एक कारण यह भी है कि क ई माता-पिता अभी भी अपनी पुरानी परिपाटी में जीते चले आ रहे हैं, उनका ये मानना कि बुढ़ापे में सब कुछ बच्चों को सौंप कर निश्चिंत जीवन हो जाएंगे।और हम आराम से बैठकर अपना जीवन बिताऐंगे।

ये उनका अपने बच्चों पर विश्वास होता है। कुछ तो पराधीन जीवन के आदि होते हैं, क्योंकि पहले माता-पिता के साथ फिर

संयुक्त परिवार में अपने बड़े भाई और बुजुर्गों के साथ रहते हुए कभी अपनी तरफ ध्यान नहीं देते।

लेकिन आज के आधुनिक काल में बुजुर्गों को अपना एक पावर रखना चाहिए ये अति आवश्यक है भले ही बेटे काबिल, संस्कारी और आज्ञाकारी हैं परन्तु अपना हाथ भी मजबूत होना आवश्यक है।

एक तो आधुनिकता उसपर एकल परिवार और फिर नौकरी पेशा होने के कारण बच्चे मां-बाप को नहीं रख सकते हैं या नहीं रखना चाहते, इसलिए वह अलग रहते हैं और उनकी एक अलग जिन्दगी की आदत भी हो जाती है। ऐसे में माता-पिता को आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। और क ई बच्चे तो इतने स्वार्थ परक होते हैं कि उनके परिवार बनते ही वह जन्म देने वाले माता-पिता को भूल ही जाते हैं।

ऐसे समय में आपके पैसे का सहयोग आपको वह दिला सकता है जो ऐसे समय आपको अपने न सही दूसरे अवश्य कभी-कभी कर देते हैं। और ये सब पैसे से संभव हो सकता है, सिवाय प्रेम के और प्रेम दिल में होता है जो अपने आप होता है किसी से जबरदस्ती नहीं कराया जा सकता और न ही ये कहने पर। वह आदर और प्रेम सिर्फ दिल में होता है और आज के बच्चे अधिकतर दिल विहीन हो जाते हैं।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती किरण मोर
जन्म - 25 नवम्बर 1963
शिक्षा - बी.ए.
पता - मकान नं.9, रघुनाथ गंज वार्ड,
कटनी (म.प्र.)
मो. - 8871235407
ई मेल - kiranmor63@gmail.com
विद्या - कविता, गीत, गजल, लेख, लघुकथा आदि।
प्रकाशन - श्रेष्ठ काव्य संगम (सांझा संकलन) में कविता जे.एम.डी पब्लिकेशन
शुभ प्रथात पत्रिका (सांझा संग्रह) दैनिक भास्कर और लोकजंग मे
भी भोपाल से प्रसारित पत्रिका में
सृजन समीक्षा (कविता संग्रह)
सपनों का भंवर (कविता संग्रह) अंतरा प्रकाशन

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-00-0
मूल्य- 55/-